श्री महावीराय नमः

जय आत्म जय आनन्द जय देवेन्द्र जय शिव

श्री बाबा दित्तू जी

संक्षिप्त इतिहास

गादिया परिवारों की परम्परायें व रीति रिवाज़

प्रकाशक

संजीव जैन 'आत्म'

महामंत्री

श्री दित्तू बाबा जैन गादिया पावन स्थल (टोमरी)

'आत्म स्मारक' गांव कनेच (साहनेवाल), जी.टी.रोड़, लुधियाना

www.jaingadhiatomri.com

श्री महावीराय नमः

स्व. श्री बसन्त राम जैन

स्व. श्रीमती यशवन्ती जैन

समाज रत्न
स्व. श्री हीरा लाल जैन

टोमरी निर्माण प्रेरक
स्व. श्रीमती जैनेन्द्र जैन

की पावन स्मृति में प्रकाशित

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर
आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज
के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन

श्री दित्तू बाबा जैन गादिया पावन स्थल (टोमरी)
व यश-बसंत अतिथि भवन का बाहरी दृश्य

सम्पादकीय

संस्कृति किसी भी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है। भारतीय संस्कृति में रीति-रिवाज़ और परम्पराओं का महत्व अनमोल है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संस्कारित करते हुए विरासत के रूप में सौंप दी जाती है। यही सांस्कृतिक विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया है।

गादिया वंश के सिरमौर हमारी श्रद्धा के केन्द्र श्री बाबा दित्तू जी (ज्येष्ठ भ्राता श्री बाबा जोधा जी व श्री बाबा खडारू जी) को नमन् करते हुए आज्ञा पाकर गादिया वंश की परम्पराओं व रीति-रिवाज़ों को लिपिबद्ध करने का प्रयास कर रही हूँ। हमारी पूर्वजों ने जो बातें अपने पुरखों से सीखी हैं, समय के साथ हमें सिखा दीं, वही धरोहर श्री मानक शाह सावन मल जैन परिवार के वंशज श्री बसन्तराम जैन, श्रीमती यशवन्ती जैन के सुपुत्र समाज रत्न श्री हीरा लाल जैन - संजीव जैन परिवार द्वारा सराहनीय प्रयास से आपके हाथों में है। गादिया वंश के रीति - रिवाज़ों एवं परम्पराओं को पुस्तक रूप में प्रकाशन का प्रथम चरण तो समाज रत्न श्री हीरालाल जैन जी की प्रेरणा और सद्ज्ञान से हुआ था लेकिन हम गादिया वंशजों के लिए अकस्मात आघात था। जब जनवरी 6, 2020 को गादिया स्वर्ण टोमरी व इस पुस्तक के आधार ज्ञान प्रकाश स्तम्भ श्री हीरालाल जैन जी का देवलोकगमन हो गया। ये पुस्तक प्रकाशन का कार्य भी रुक सा गया। फिर उनके पद्चिन्हों पर चलने वाले श्रवण पुत्र भाई श्री संजीव जैन 'आत्म' जी के साथ मिलकर इस पुण्य कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है। ये हमारे पूर्वजों द्वारा प्रदत्त धरोहर है। इन्हें

संभालना व मन से निभाना हमारा दायित्व है। श्री बाबा दित्तू जी के प्रति श्रद्धाभाव से हम सभी रीति-रिवाज़ों को पढ़कर मंगलकार्य मंगलमय ढंग से सम्पन्न करें और बाबा दित्तू जी का आशीष हर कदम पर हर पल प्राप्त करते हुए आनन्दमय जीवन बनायें।

श्री संजीव जैन 'आत्म' जी के साथ मिलकर गादिया वंश के जन्म से लेकर हर रीति-रिवाज़ व परम्परा को स्पष्टता से लिपीबद्ध करने का मेरा प्रयास आपके समक्ष है। इस पुस्तक के संशोधन के लिए आपका सुझाव सादर आमन्त्रित है। पुस्तक में अंकित गादिया वंश के संस्कार, पूजन और रीतियाँ अपने बुजुर्गो द्वारा निर्देषित पद्धतियों के अनुसार पूर्ण करते हुए इस सांस्कृतिक धरोहर को मन और श्रद्धा से अपनायें। इसी अनुरोध के साथ आपके उज्जवल-समृद्ध भविष्य के लिए मंगल कामनाएँ।

हर कण में शांति खुशहाली का वास हो,

हर मन में अहिंसा परोपकार का भाव हो।

बाबा दित्तू जी के चरणों में शत्-शत् वन्दन।।

डा. बबिता जैन 'वाणी'

महामंत्री बाबा दित्तू जी महिला मंडल, लुधियाना

धर्मपत्नी श्री अश्वनी जैन लुधियाना

पुत्रवधू स्व. श्री जितेन्द्र - दर्शना जैन (हापुड़ वाले)

एडवोकेट स्व. श्री खजांची लाल जैन - रत्न देई जैन परिवार

(सियालकोट वाले)

जय महावीर जय बाबा दित्तू जी जय आत्म

आभार

बाबा दित्तू जी के वंश के अंश - हम सभी अपने परिवारों में हर मंगल कार्य अपने पूर्वजों को नमन करते हुए आरम्भ करते हैं। सभी परम्परायें और रीति-रिवाज़ निभाते हुए कहीं-कहीं मानवीय शंकालु प्रवृति हमें कह देती है कि हम ठीक से निभा रहे हैं क्या ? इसी दुविधा से निजात दिलाने का प्रयास है यह पुस्तक। इस पुस्तक में गादिया गोत्र के सभी रीति-रिवाज़ व इतिहास को लिपिबद्ध किया गया है। हमारे परिवार की इस इच्छा को साकार रूप देने में सम्पादिका डा. बबीता जैन धर्मपत्नी श्री अश्वनी कुमार जैन व अन्य सहयोगियोंके सद्प्रयासों को आभार।

श्री बाबा दित्तू जी के हम सभी वंशज अपने परिवार में हर शुभ कार्य को पूर्ण श्रद्धा भाव से विधि-विधान के अनुसार सम्पन्न करे और श्री बाबा दित्तू जी की हम सब पर दयादृष्टि बनी रहे। गादिया वंश का हर अंश दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करे। यही मेरे अन्तःकरण से मंगल कामना है और इस पुस्तक में अंकित परम्पराओं में किसी भी त्रुटि के लिए बाबा श्री दित्तू जी से क्षमायाचना करते हैं।

जय बाबा दित्तू जी की।

संजीव हीरालाल जैन
महामन्त्री - बाबा दित्तू जैन गादिया टोमरी
मार्च 29, 2026 आत्म नगर, लुधियाना, पंजाब

अणुक्रमणिका

1.	इतिहास गादिया गोत्र	1
2.	स्वर्णिम टोमरी लुधियाना का इतिहास	3
3.	गधैया गोत्र के वंशजों द्वारा की जाने वाली धार्मिक रीतें करने के नियम	6
4.	नवा	7
5.	सेया/सेहया	11
6.	प्रथम बाल काटने की रस्म	14
7.	बोदी (मुंडन) करना	15
8.	भोज	18
9.	रीतें	20
10.	खिलौने	21
11.	खिलौने चढ़ाने अथवा माथा टेकना	25
12.	हाथभरा	28
13.	घोड़ी	33
14.	लावां/लड़की की ड़ोली	35
15.	दीपावली	36
16.	न्योज	37
17.	अरदास	38

इतिहास गादिया गोत्र

जैन धर्म बहुत ही प्रचीन है। समय-समय पर हर चीज में परिर्वतन होता रहा है। आज से 2600 वर्ष पहले भगवान महावीर स्वामी जी से 100 साल बाद आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरि-जी ने एक लाख क्षत्रियों को जैन बनाया, और आज से लगभग नौ सौ वर्ष पहले विक्रमी संवत 1141 में अति प्रभावी जैन आचार्य श्री जिनदत्त सूरिश्वर जी महाराज ने जैन समाज को 499 गोत्रों में विभाजित किया। इस में गादिया गोत्र की शुरूआत हुई।

श्री जिनदत सूरिश्वर जी महाराज के सदुपदेश से प्रभावित होकर चनदेरी (राजद्व) के राजा खरहत्थ सिंह राठौर ने जैन धर्म स्वीकार किया, उनके दत्तक पुत्र सेनहंथ का लाड़ का नाम गद्दाशाह जी था। इन्हीं गद्दाशाह जी की संतानें आगे जाकर गधैया के नाम से मशहूर हुई और धीरे-धीर यह नाम गोत्र के रूप में परिणत हो गया इस तरह धीरे धीरे गादिया परिवारों के वंशजों का विस्तार होता गया और आजीविका के लिए आस पास के प्रान्तों में पहुंच कर वहीं के निवासी बनते गये।

औरंगजेब के कार्य काल में उसके अत्याचारों से दुःखी हो कर हमारे पूर्वजों की एक शाखा अपने निकटतम प्रान्त पंजाब में

आकर बस गई, (विशेषकर स्यालकोट में)

भारत की परिस्थितियां बदली और पाकिस्तान बन गया अतः पुनः हमारे पूर्वजों को वर्तमान पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में पहुंच कर पुनः आजीविका के नये नये साधन जुटाते हुऐ विभिन्न नगरों में आकर आवाद होना पड़ा, और अपने बजुर्गों के निर्धारित नियमों का पालन करते हुए बाबा दित्तू जी की रहमतों से अपने-अपने पारिवारिक जनों को सुख-समृद्धि एवं जीवन निर्वाह के योग्य बना रहे हैं।

श्री दित्तू बाबा जैन गादिया पावन स्थल (टोमरी) का भव्य दृश्य

बाबा दित्तू जी के पवित्र तीर्थ स्थान स्वर्णिम टोमरी, लुधियाना का

इतिहास

बाबा दित्तू जी का वंश - गादिया वंश रूपी वृक्ष की शाखाओं रूपी वंशज परिवारों का भारत विभाजन के समय अपने मूल स्थान स्यालकोट से अलग होना, एक हृदयविदारक पल रहा है। ऐसे समय में लाला काँशीराम जी स्यालकोट में स्थित टोमरी से एक ईंट ले आए और जम्मू में टोमरी की स्थापना की गयी जिससे बाबा जी के वंशजों को अपने बाबा दित्तू जी के स्पर्श से मन को शांति मिल सके। समय अपनी रफ्तार से आगे बढ़ता रहा और गादिया वंशज देश की विभिन्न दिशाओं में व्यवस्था व निवास हेतु पलायन होते गए। बाबा दित्तू जी के जयकारे देश के कोने-कोने से गूँजने लगे। बाबा दित्तू जी के स्पर्श का अहसास तो उन्हें हर पल जम्मू जाने के लिए प्रेरित करता। बाबा जी के दिल्ली निवासी वंशजों ने दिल्ली में बाबा दित्तू जी की टोमरी स्थापना की बात सोची और बाबा जी के आर्शीवाद से पूर्ण हो गयी।

ऐसे ही अनमोल पल हुआ करते हैं जब पूर्वजों की कृपाएँ अपने वंशजों पर बरसा करती है और नेक कार्यों के लिए सूत्र रूपी सुपात्र वंशज भक्त का चयन भी तो वही करते हैं, जिनके स्वप्नों में आकर इच्छा जागृत करते हैं और अपने उस विशेष भक्त के मुखारविन्द से ऐसे कल्याणकारी शब्द कहलवाते हैं जो उसकी पूर्णता का शुभारम्भ होता है और फिर इतिहास बन जाया करता है। ऐसा ही शुभ समय रहा होगा जब बाबा

दित्तू जी के प्रति पूर्ण आस्था रखने वाली पवित्र आत्मा, निच्छल स्वभाव की सरलता-सादगी का साक्षात् प्रतिमूर्ति श्रीमती जिनेन्द्र जैन धर्मपत्नी समाजरत्न श्री हीरालाल जैन ने अपने सांसारिक जीवन की पूर्णता के अन्तिम दिनों में - रूग्णावस्था में अस्पताल से उठकर एकाएक निर्माणाधीन 'आत्म स्मारक' कनेच, नज़दीक साहनेवाल, लुधियाना जाने की इच्छा व्यक्त की और श्रवणपुत्र श्री संजीव जैन 'आत्म' ले गए माँ की इच्छापूर्ति करने। जिस परिवार में समाज कल्याण व उत्थान के लिए समर्पित समाजरत्न हीरालाल जैन हैं, बाबा दित्तू जी व परिवार को समर्पित जीवनयापन करने वाली धार्मिक प्रवृत्ति की गृहिणी श्रीमती जिनेन्द्र जैन हो और उनके संस्कार हों, वही भक्त वंशज तो बाबा दित्तू जी को प्रिय होते हैं।

श्री जिनेन्द्र ने आत्म प्रभु स्थान 'आत्म स्मारक' के प्रांगण में प्रवेश कर एक विशिष्ट स्थान की ओर संकेत करते हुए स्नेहिल मुस्कान के साथ श्री हीरा लाल जैन जी को कुछ यूँ कहा,''आप समाज के उत्थान के लिए दिन-रात लगे रहते हैं, इतने संस्थान चला रहे हैं, एक स्थान बाबा जी का भी होना चाहिए । मेरी यही इच्छा है, इसी धरा पर बाबा दित्तू जी की पवित्र टोमरी का निर्माण भी होना चाहिए''। धर्मपत्नी का भाव देख धर्मपरायण श्री हीरालाल जी ने उनकी इस इच्छा को अपना सपना बनाया। एक दिन बाद वह पवित्र आत्मा तो सांसारिक जीवन यात्रा को पूर्ण कर प्रभु ज्योति में समा गयी-लेकिन उनके कहे शब्दों में व्यक्त स्वप्न को साकार करने में दृढ़निश्चयी श्री हीरालाल जी व पूरा गादिया परिवार जुट गया। कोशिशें ही कामयाब हुआ करती हैं। गादिया परिवार रूपी माला के बाबा दित्तू जी रूपी धागे में अपने श्रद्धाभाव रूपी पुष्प अर्पित करने को हर वंशज का मन आतुर हो गया। सबको पवित्र स्थान टोमरी का निर्माण

अपना स्वप्न व दायित्व लगने लगा । जुट गए गादिया वंशज पवित्र स्थान टोमरी के निर्माण में। ऐसे भाव हों तो बाबा दित्तू जी का आशीष तो सदैव संग रहता है ।

सन् 2006 में जम्मू स्थित बाबा दित्तू जी की टोमरी से ईंट रूपी पावन अंश श्री सुभाष जैन सुपुत्र श्री शौरी लाल जैन, एस. आर. वूलन मिल्स ने श्री हीरा लाल जैन के मार्गदर्शन में लगभग 200 गादिया वंशजों के साथ श्रद्धापूर्वक लाकर, लुधियाना में 28 जनवरी 2007 में 'आत्म स्मारक' के पास गाँव कनेच, नज़दीक साहनेवाल, लुधियाना में-जो स्थान प्रेरणास्रोत स्वः श्रीमती जिनेन्द्र जी ने चुना था,- पर स्थापित की गई। इस पवित्र स्थान की स्थापना के साथ बाबा दित्तू जी के भक्तों को इनका सान्निध्य पाने का सुअवसर मिल गया।

आज हर गादिया वंशज पर तो बाबा की कृपा बरसती ही है, उसके साथ-साथ हर आगंतुक की मुरादें पूर्ण होती हैं। जो आता है मुँह माँगी मुरादे पाता है। मात्र 10 वर्षों में ही बाबा दित्तू जी की 'टोमरी' की प्रबन्ध समिति के चेयरमैन श्री हीरा लाल जैन, अध्यक्ष श्री जतिन्द्र जैन (श्रमण जी यार्नस) एवं समस्त कार्यकारिणी के प्रयासों से यह पावन स्थल 'स्वर्णिम टोमरी' के रूप में देशभर में प्रसिद्ध हो गयी है। बाबा दित्तू जी गादिया परिवार के लिए एक पल सन 2020 में ऐसा आया जब स्वर्णिम टोमरी के चेयरमैन एवं प्रेरणास्रोत समाज रत्न श्री हीरालाल का देवलोकगमन हो गया। ऐसा लगा गादिया वंशजों की माला के सूत्र के बिना कैसे आगे चलेगी। बाबा दित्तू जी की प्रेरणा व आशीष से गादिया वंशजों ने इस धरोहर को संभाला। आज बाबा श्री दित्तू जी टोमरी स्वर्णिम आभा के साथ गादिया वंशजों एवं जैन - अजैन सभी की आस्था का केंद्र है। सभी सम्प्रदाओं के संत एवं श्रद्धालु इस पावन स्थान के दर्शनार्थ आते है - मुँह मांगी मुरादें पाते हैं।

गधैया गोत्र के वंशजों द्वारा की जाने वाली धार्मिक रीतें करने के नियम

1. कोई भी शुभ काम करते समय अर्थात् माथा टेकने के समय या खिलौने बनाने के समय अथवा नवा, सैया, बोदी आदि के समय किसी भी सदस्य ने काला कपड़ा नहीं पहनना है और न ही कोई चमड़े की वस्तु पहनकर आये।
2. प्रत्येक शुभ कार्य करते समय औरतों ने सिर ढक कर ही बैठना है।
3. हर शुभ कार्य में कोई भी रजस्वला और जिसे माहवारी आयी हों वह किसी पूजन की वस्तु को हाथ नहीं लगा सकती और न ही माथा टेक सकती है और न ही माथा टेकी हुई कोई भी चीज़ खा सकती है।
4. माथा टेकने के बाद घर में न तो कपड़े धोने हैं और न ही महिलाओं ने सिर नहाना है।
5. जब भी कोई नया कार्य आरम्भ करना हो या शुभ कार्य करना हो, यात्रा पर जाना हो या यात्रा से वापिस आना हो जो बाबा दित्तू जी के नाम से सुच्चे पानी से, जूते उतार कर पूरब दिशा की ओर मुँह कर के पैसे धो लें और उन्हें अलग रखते जाएं। यह पैसे खर्च नहीं करने चाहिए। जब ''नवा'' निकालना हो उस दिन इन पैसों का ''तमासा'' चढ़ा देवें।
6. अगर अपने परिवार में कोई कुंवारा लड़का न हो तो शरीके के घरों में से किसी कुंवारे लड़के को बुला कर उसे बाबा बना सकते हैं।
7. लड़कों की ''सेया'' उनकी बोदी से पहले ही निकाल लेना ज़रूरी है ।
8. जब घर में बच्चा पैदा होता है तो उसे पालने में डालना हो तो वह पालना हम खुद नहीं खरीद सकते, क्योंकि यह हमारी रीत नहीं है। किसी के तोहफे के रूप में दिया हुआ इस्तेमाल कर सकते हैं ।

नवा

यह साल में दो बार आता है।

1. चैत्र के नवरात्रों के बाद - मार्च अप्रैल में
2. आसोज (अस्सू) के नवरात्रों के बाद - सितम्बर अक्तूबर में

इन के लिए तिथी और वार आदि देखने पड़ते हैं।

तिथी वार

शुदि (शुक्ल पक्ष) दूज 2, पंचमी 5, दशमी 10,
त्रयोदशी 13, पूर्णमाशी 15

शनिवार, रविवार, सोमवार - अगर इन दिनों में ऊपर वाली तिथियाँ न आ सकें तो वदी (कृष्ण पक्ष की) दूज और पंचमी ले सकते हैं। लेकिन वार वही होने चाहिए।

चैत्र अर्थात् मार्च - अप्रैल के नवरात्रों के बाद जो ''नवा'' आता है वह रोटियों का होता है। जिस दिन यह ''नवा'' आता है उस दिन सुबह या एक दिन पहले खेतों से कनक का सिट्टा मंगवा लें और कटोरी में केसर घोलकर रख लेवें। थोड़ी सी शक्कर भी मंगवा लेवें। एक कटोरी में थोड़े से चावल रख लेवें।

सुबह उठकर घर की महिलायें पहले सिर नहा लें। फिर बर्तन चुल्हा व रसोई साफ कर लें।

चकला-बेलना, तवा-परात, पतीले-कड़छी, प्लेटें-गिलास सब माँज-धोकर शुद्ध कर लें।

टिफिन व डिब्बा जिसमें नवा रखना है और जो बर्तन ज़रूरी हों उन्हें स्वयं माँज-धोकर रख लेवें।

रोटियाँ बनाने के समय बाल खुले नहीं होने चाहिए। सिर ढक कर रोटियाँ बनानी चाहिए।

जितनी देर में रोटियाँ बनानी है उतनी देर में बाज़ार से ''तमासा'' मंगवा लें। ''तमासा'' एक जगह सवा पाँच रूपए का और दो जगह सवा-सवा रूपए का मिश्री का मंगवाना चाहिए। मिश्री न मिले तो शूगर क्यूबस भी मंगवा सकते हैं। समय के मुताबिक ''तमासा''बढ़ा सकते हैं। कम नहीं करना है।

जो पैसे बाबा जी के नाम से धोकर रखे हुए हैं, उनकी बर्फी मंगवा लें।

अब 41 रोटियों और टिकड़े के लिए आटा गूंध लें तथा कनक के सिट्टे के दाने निकाल कर उसी आटे में डाल देवें।

41 रोटियाँ तल कर बना लेवें। फिर बाकी आटे में से सात पेड़े छोटे-छोटे बना कर उनका एक टिकड़ा बना लें।

अब दो प्लेटों में केसर से सातिया (स्वास्तिक) बना लें जो टिकड़े वाली रोटी है वह एक गिलास में डालकर उसे सातिये (स्वास्तिक) वाली प्लेट में रख दें। सातिये वाली दूसरी प्लेट में चन्दन की धूप जला कर रखें।

अब 7-7 रोटियाँ पाँच जगह टिफन में डाल कर रखें।

एक प्लेट में चार रोटियाँ ब्राह्मणी को देने के लिए, एक प्लेट में दो रोटियाँ गाय को देने के लिए रखें। यदि कच्चा आटा बच जाए वह भी एक प्लेट में डाल कर रख दें, वह भी ब्राह्मणी को ही देना होता है।

पाँच छोटे कागज़ लेकर उसमें थोड़ी सी शक्कर और एक बूँद घी डाल कर पाँच पुड़ियाँ बना लें। एक-एक पुड़ी सभी रोटियों के साथ रख दें। कुछ शक्कर और घी टिकड़े में भी डाल दें और सब रोटियों के साथ मिश्री और बर्फी भी डाल दें।

जिनके घर में अपनी गाय है तो उन्होंने नवे के दिन दूध की खीर भी बनानी चाहिए। एक गिलास में खीर डालकर माथा टेकना है और शरीके

के किसी एक घर में नवे के साथ खीर भी देनी होती है।

परिवार के सब लोग एक साथ बैठकर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके 5 बार नवकार मंत्र पढ़ कर केसर के टीके लगा कर और सिर पर रूमाल रखकर चावलों के साथ बाबा श्री दित्तू जी की जय बुला कर माथा टेक लें। माथा टेकते समय कोई भी लड़की पास नहीं बैठनी चाहिए।

अब परिवार में से एक कुंवारे लड़के को ''बाबा'' बनायें। सबसे पहले गिलास वाली प्लेट जिसमें टिकड़ा रखा है, उसको 'बाथुआ' कहते हैं। वह बाबा जी को पकड़ा कर उसके पाँव चूम लें। अगर खीर बनाई है तो उसका गिलास भी बाबा जी पकड़ा कर उनके पाँव चूम लें। अब 7-7 रोटियों वाले टिफिन, जिन्हें ''हन्ता'' बोलते हैं सभी बाबा जी को पकड़ा कर उनके पाँव चूम लेवें। अब मिश्री वाली थाली पकड़ा कर पाँव चूम लेवें। फिर बर्फी की प्लेट पकड़ा कर पाँव चूम लेवें। अब उसी समय थोड़ी सी मिश्री और बर्फी बाबा जी के मुँह लगवा दें। अब टिकड़े को सब परिवार वाले खा लेवें। यह टिकड़ा किसी लड़की को नहीं खाने देना है।

सात-सात रोटियों वाले पाँच ''हन्ते'' अपने शरीके के घरों में दे दें। गाय वाली रोटी गाय को और ब्राह्मणी के निमित्त बनाई रोटी और कच्चा आटा ब्राह्मणी को दे दें। अपने घर का ''नवा'' खुद नहीं खाना है जो दूसरों के घरों से ''हन्ता'' देने आते हैं, वही रोटियाँ खानी होती हैं। उनके डिब्बे में थोड़े से कच्चे चावल डाल दें।

नवे वाले दिन सुबह के समय चाकू से कोई सब्जी नहीं काटनी है और न ही बनानी है। साबुत मूँगी बना कर उसके साथ रोटी खानी चाहिए।

रोटी के नवे के दिन चावल नहीं बनाने हैं और चावल के नवे के दिन सुबह रोटी नहीं बनानी है।

घर की कोई भी महिला यदि रजस्वला हो अर्थात मैन्सस आये हों, वह न तो ''नवा'' बना सकती है और न ही माथा टेक सकती है और न

ही नवे की रोटी, चावल, तमासा अर्थात् मिश्री व बर्फी आदि भी नहीं खा सकती है। अगर तीन दिन हो गये हों तो सिर नहा कर वह भी खा सकती है।

अगर आप पाँच ''हन्ते'' न बनाना चाहें तो एक या दो हन्ते भी निकाल सकते हैं।

अगर परिवार में कुंवारा लड़का न हो तो किसी भी शरीके के घर से कुंवारे लड़के को बुला कर उसे ''बाबा'' बना सकते हैं।

छः महीने के बाद जब दूसरा ''नवा'' आये तो उसमें रोटियों की जगह चावल बनाने होते हैं, शेष सब कुछ वैसे ही करना है कच्चे आटे की जगह कच्चे चावल रखने हैं, अगर घर में दुधारू गाय है तो खीर भी अवश्य बनानी होती ।

अपने घर में बनाया हुआ ''नवा'' अर्थात माथा टेका हुआ नवा खुद नहीं रखना है, बल्कि अपने शरीके के घरों में दे देना है और उनके घरों से आया हुआ नवा ही खाना है।

नोट - आज कल पारिवारिक सदस्य कम हो गए हैं इसलिए स्थिति अनुसार हन्ते कम से कम दो जरूर बनाएं।

सेया/सेहया

यह रीत बच्चा होने के बाद की जाती है। चाहे लड़का हो या लड़की।

''सेया'' के लिए किसी दिन या वार की रूकावट नहीं है। सिर्फ यह देखना है कि उन दिनों श्राद्ध न हों, मसान्द अर्थात सक्रांति से पहले वाला दिन नहीं होना चाहिए। यदि बच्चा होन के 40 दिन के अन्दर ही अन्दर सेया कर लें तो कुनेत्तर का कोई भी डर नहीं होता है, कोई शुभ दिन देखकर सेया निकाल लें। अगर 40 दिन के बाद सेया करनी है तो कुनेत्तर महीने में नहीं करनी है।

''सेहया'' में शरीके की औरतों को बुलाना होता है और लड़कों की सेया उनकी बोदी/रीतों से पहले करनी ज़रूरी होती है। अगर किसी वजह से न निकाल सके हों तो बोदी वाले बच्चे के कपड़े लेने से पहले निकाल लेवें। अगर 40 दिन से पहले सेहा निकाले तो बच्चे की माँ ''सेया'' में बैठकर माथा नहीं टेक सकती। अगर 40 दिन के बाद निकाले तो माँ 'सेया' में बैठ कर माथा टेक सकती है।

सेया में केसर का टीका नहीं लगाना है ।

सेया का सामान

हलवा	–	250 ग्राम प्रति व्यक्ति
चीनी	–	250 ग्राम प्रति व्यक्ति
सफेद जीरा	–	1 चम्मच प्रति व्यक्ति
सुण्ड	–	2 टुकड़े प्रति व्यक्ति
लड्डू बधाई के	–	8 प्रति व्यक्ति

विधि :-

यह सब सामान लिफाफों में डालकर रख लें। यह सब सामान शरीके की प्रत्येक महिला को देना होता है। हलवा एक लिफाफे में डालकर और फिर थोड़ा-थोड़ा जीरा, चीनी, सोंठ दूसरी लिफाफे में डालकर दीजिए।

(क) सात रोटियाँ

(ख) एक प्लेट उबले हुए चावलों की

(ग) चार रोटियाँ - ब्राह्मणी की

(घ) दो रोटियाँ - गाय की

एक गिलास में थोड़ा-थोड़ा हलवा सात बार डालें। बेशक आधा गिलास हो जाए।

अब दूसरे गिलास में थोड़ा सा हलवा डाल कर उसमें सात बादाम डाल दें।

अब एक थाली में थोड़ा-थोड़ा हलवा आठ बार डालें और दूसरी तरफ में थोड़ा-थोड़ा हलवा नौ बार डालें। इसे ''नावां-ठावां'' कहते हैं। उसी थाल में थोड़ा सा हलवा धरती माता के नाम का डालें। और थोड़ा सा हलवा बड़ों के नाम का डालें।

अब एक थाली में चीनी और हलवे वाले सात-सात लिफाफे रखें।

नवकार मंत्र पढ़कर कच्चे चावलों से माथा टेक लें और ''बाबा'' बना लें । जो बच्चा पैदा हुआ है अगर लड़का है तो अपनी ''सेया'' में बाबा नहीं बन सकता।

जिस बच्चे को बाबा बनाया है उसको पहले हलवे वाला गिलास पकड़ा कर पाँव चूम लें।

फिर सात रोटियों वाली थाली उसको पकड़ा कर पाँव चूम लें।

अब इसके बाद ''नावां-ठावां'' वाले थाली को एक तरफ करके

चावलों से माथा टेक लें। इसमें बाबा जी का नाम नहीं लेना है और इस थाल का सामान ब्राह्मणी को दे दें।

गिलास वाले हलवे में से थोड़ा सा हलवा बाबा जी के मुँह लगा दें और जिस गिलास में हलवा और बादाम हैं वी बच्चे की माँ को दे दें। वह उसे खुद न खाये, बच्चों के खिला दे।

अब सात रोटियों वाली थाली और चावल वाली थाली अपने शरीके के घरों में बाँट दें। किसी घर में रोटियाँ दें और किसी घर में चावल दीजिए।

ब्राह्मणी को ब्राह्मणी का सामान दे दें और गाय को गाय का सामान खिला दें।

प्रत्येक शरीके की औरत को हलवा, चीनी, सोंठ और सफेद जीरे के लिफाफे दे दें। एक सेहा है तो एक-एक लिफाफा। अगर दो बच्चों की सेया है तो हर चीज़ के दो-दो लिफाफे देने हैं।

गाय की रोटियाँ उसी दिन खिला दें। दूसरे दिन के लिए न रखें।

प्रथम बाल काटने की रस्म

सुच्ची झण्ड

प्रत्येक बच्चे के पहले बाल चाहे वह लड़का है या लड़की, माँ-बाप से चोरी कटवाते हैं। घर का कोई भी सदस्य या बाहर का कोई सदस्य बच्चे को लेकर अपने साथ दो रोटी बिना घी के, बच्चे के माँ-बाप को बताये बिना नाई के पास ले जाकर उस्तरे से सारे बाल कटवाकर उसे रोटी पर रखकर ले आए व बच्चे को माँ की गोद में दे दें और रोटी व बालों को किसी नदी में प्रवाह कर दें। बाल मंगल, शनिवार और रविवार को न कटवायें। बाकी दिन सक ठीक हैं। मसान्द (सक्रान्ति से पहला दिन), कुनेत्तर और श्राद्ध के दिनों में भी बच्चे के बाल न कटवायें।

'बोदी' (मुंडन) करना

बोदी लड़कों की ही की जाती है। जिसे पाँचवें, सातवें और ग्यारहवें वर्ष में जब चाहे तब कर सकते हैं। बोदी के लिए दिन वार और तिथी देखनी पड़ती है जोकि :-

(क) शुदि (चानने-शुक्ल पक्ष की) दूज-2
(ख) पंचमी (5)
(ग) दशमी (10)
(घ) त्रयोदशी (13)
(ड़) पूर्णमाशी (15)

और वार सोमवार ही होना ज़रूरी है अगर ऊपर लिखी तिथियों पर दिन न निकले तो वदी दूज और पंचमी भी ले सकते हैं, परन्तु वार सोमवार ही होना चाहिए। बोदी किसी भी कार्तिक (कुनेत्तर), श्राद्ध, मसांद (संक्रान्ति से पहला दिन) और होली आदि दिनों में नहीं कर सकते।

बोदी वाले बच्चे के कपड़े अपने घर के ही होते हैं, नानकों या किसी रिश्तेदार के नहीं। कपड़े लेने से पहले बाबा जी के नाम से पैसे धो लें।

अगर कपड़े सिलवाने हों या रेडिमेड लेने हों तो बोदी से पहले जो शुक्रवार आए उस दिन कपड़े लेकर सिलने दे दें व रविावार को दर्जी से वापिस ले लेवें।

अगर रैडीमेड कपड़े लेने हों तो शुक्रवार को देखकर रविवार को ले सकते हैं।

जिस दिन कपड़े लेकर घर आयें उसके बाद उस दिन घर में न तो कपड़े धोयें और न ही सिर के वाल धोयें।

बोदी के कपड़ों में कोई भी चीज़ काले रंग की नहीं होनी चाहिए। बूट भी काले नहीं होने चाहिए।

बोदी का सामान :-

मौसम के अनुसार स्वैटर, कोट, पैंट, कमीज़, बनियान, पगड़ी और सफेद दुपट्टा सवा दो मीटर का, तौलिया, क्रीम, कंघी और परांत आदि।

रविवार को बनियान पर केसर के साथ साथिये/स्वास्तिक डाल बना दें और दुपट्टे के चारों कोनों पर भी साथिये डाल दें। सब कपड़ों को तैयार करके एक छज्ज में रख दें।

1. मिश्री का तमासा या Sugar Cubes
2. एक नारियल
3. थोड़े से कच्चे चावल
4. थोड़ा सा केसर का घोल बनाकर, मौली
5. थोड़ा सा दही और बटना (बेसन का) परात, बाल्टी और मग आदि

नारियल को छील कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके एक थाली में मिश्री और नारियल रख लें।

बोदी में सिर के सारे बाल नहीं कटवाने होते, सिर्फ पीछे की तरफ नाई से थोड़े बाल कटवा कर बोदी बना ली जाती है और यह बोदी नहलाने से पहले बनवानी होती है।

जिस जगह पर बोदी करनी है वहाँ पर सबसे पहले घर का या शरीके का बड़ा आदमी बच्चे को उठा कर परात में बिठा दे।

परात में सवा रूपया, बादाम व चाबियों का गुच्छा डाल दें। अब लड़के के सारे कपड़े उतार दें।

सबसे पहले लड़के की दायीं कलाई पर उसकी माँ या घर की बुजुर्ग महिला मौली बाँध दे। फिर शरीके की तीन सुहागिनें लड़के को मौली

बाँधें। इस तरह ये चार चारियाँ कहलाती हैं। घर की लड़की चारियाँ नहीं बन सकती। अगर शरीके की औरतें कम है तो लड़की की पुत्रवधु चारियाँ बन सकती है ।

पहले से ही 9 चारियाँ बना लें ।

अब माँ लड़के को थोड़ा सा उबटन मल दे। फिर तीनों चारियाँ बटना मलें। अब माँ लड़के को दही मल दें, उसके बाद दूसरी तीन चारियाँ लड़के को दही मलेंगी। अब पहले माँ पानी डालेगी और फिर नई तीन चारियाँ पानी डालेंगी। अब लड़के को अच्छी तरह से पानी डालकर नहला दें।

जिस बुजुर्ग ने लड़के को परात में बिठाया था वही उसे उठाकर बाहर निकालें और माँ-बाप तौलिये से पोंछ कर कपड़े पहनायें। अब बुजुर्ग सिर पर पगड़ी बाँध दें या रख दें व गले में दुपट्टा डाल दें और कुर्सी पर बिठा दें।

जिस कुर्सी पर बच्चे को बिठाया है उसके नीचे साथिया/स्वास्तिक बना कर ऊपर एक बादाम रख दें। अब थाली में मिश्री व नारियल रख लें और सब शरीक इकट्ठे होकर बाबा जी के नाम के सोलड़े बोलें । सब शरीकों को केसर का टीका लगा कर कच्चे चावलों से पाँच बार नवकार मंत्र पढ़कर बाबा दित्तू जी का जयकारा बुला कर माथा टेक लें। अगर किसी को शान्ति पाठ या कोई स्तोत्र आता हो तो वह भी पढ़ ले।

अब अपने परिवार के एक लड़के को बाबा बना कर मिश्री और नारियल वाला थाल पकड़वा कर उसके पाँव चूम लें और थोड़ी-थोड़ी मिश्री सब के मुँह लगवा दें। फिर लड़के की माँ केसर के साथ सात बार लड़के के गाले-माले कर लें और फिर इसके बाद बच्चे को हार आदि डाल कर शगुन ले लें। फिर पाँच बार नवकार मंत्र पढ़कर लड़के को कुर्सी से उठा लें ।

जिन्होंने सोखमी (सुखणा पूरी करने के लिए) बोदी करनी हो वे सवा पाँच किलो गुड़ के अंदरसे बनवाकर माथा टेक लें।

भोज

भोज करने के लिए कोई तिथि नहीं देखनी होती है । रविवार या वीरवार होना चाहिए। पंडितों से पूछ कर भोज का दिन शादी से पहले व शुक्ल पक्ष में होना चाहिए।

जिस दिन भोज भरने हैं। उस दिन लडके की माँ सुबह नहा धोकर साफ-सुथरे कपड़े पहन कर (काले रंग के कपड़े नहीं पहनने हैं) खुले बाल रखकर (बालों में कंधी और क्लिप का इस्तेमाल नहीं करना) थोड़े से चावल- केसर लगे रुमाल या झोली में रखकर नंगे पांव (बिना चप्पल, बिना जुराबों के) किसी से बात नहीं करनी। घर में किसी आदमी या औरत को साथ ले लें। थोड़े-थोड़े चावल अपनें शरीकों के सात घरो में दे दें। अगर शरीकों के घर कम हों तो गादिए परिवार में किसी को भी दे सकते हैं। वाहन का प्रयोग कर सकते हैं, चावल बाँटकर घर वापिस आकर बातचीत कर सकते हैं। अगर लड़के 1 या 3 है तो चौथे लड़के की जगह एक प्लेट में 1kg गेहूँ रख सकते हैं। भोज हमेशा जोड़ो के भरे जाते है जैसे (2-4-6-8) आदि ।

भोज का सामान

लुच्चियाँ, लड्डू, घोला हुआ केसर, पानी का लोटा, मेंहदीं (घुली हुई), मौली, रुई, चंदन, धूप, थोड़े से कच्चे चावल, दो चौंकी ।

विधि :-

जिस दिशा में सूरज निकलता है उसके सामने की दीवार की तरफ एक चौंकी रख लें, उसके ऊपर प्लेट में आटे का दिया बना कर उस पर मौली बांध कर रख लें, अब घुली हुई केसर से दीवार पर चार ठप्पे लगायें एक लाईन में (ठप्पे पूरे हाथ के निशान के होने चाहिए) अब चार ठप्पे के नीचे दों ठप्पे लगायें और दो ठप्पे के नीचे एक ठप्पा लगायें इस तरह कुल सात ठप्पे लगायें।

अब मेंहदीं घोल कर मौली के दोनों किनारें को मेंहदी से ठप्पे के दोनों ओर हार की तरह चिपका दें। अगर आप समझे कि दीवार खराब हो जाएगी तो एक बड़ा सफेद कागज दीवार पर लगा कर उस पर बना सकते है।

अब 7-7 लुच्चियाँ 21 जगह रख कर उस पर एक-एक लड्डू रख दें। साथ हलवा भी रखना है। अब लुच्चियों पर केसर का टिका लगा दें।

परिवार में से कोई बड़ा आदमी/औरत 7 लड्डू लड़के की झोली में डालने है व 7 लड्डू माँ की झोली में डालने है। यह लड्डू छोटे बना लें व सूरज छिपने से पहले ही खा लेने है। लड़के व माँ के मेंहदीं लगानी हैं। एक लुच्ची धरती माता के नाम की निकालनी हैं। एक लुच्ची बड़े के नाम की निकालनी हैं। अब जोत जगा लें। लड़के को भी पूर्व दिशा की ओर मुँह करके बिठाना है। अब जोत को थाली या परात से ढक लें क्योंकि लड़के की माँ ने माथा टेकने से पहले जगते दीपक को नहीं देखना है। अब माथा टेक लें। उसके बाद परात को हटा दें। जिन स्त्रियों ने अभी अपने बच्चों

की रीतें या बोदी नहीं की है उन्हें यह माथा नहीं टेकना है न ही मन्सी हुई लुच्चियाँ खा सकते हैं। जिन लड़कों के भोज नहीं भरे गए वह भी मन्सी हुई लुच्चियाँ नहीं खा सकते हैं। बाबों का माथा टेकने के बाद नवकार मंत्र पढ़ कर लुच्चियाँ का माथा टेकना हैं। सूरज को माथा टेकना और जल चढ़ाना है। (सूरज को माँ व बेटे ने माथा टेकना है)। अब बड़ो के नाम की व धरती के नाम की सारी लुच्चियाँ ब्राह्मणी को दे दो। बाकी सब चीज़े जैसे जोत, मेहन्दी, कागज आदि जल प्रवाह कर दें। तिलक वाली लुच्चियाँ शरीकों में बाँट देनी है। लड़कियाँ खा सकती है।

भोज भरने के बाद रीतें करनी है। दिन सोम, रविवार, शनिवार व शुक्ल पक्ष होना चाहिए। दो किलों मूँग दाल भिगोनी है। एक दिन पहले मीठी दाल बनवानी है। (सुच्ची रखनी है) 7 जगह दाल रखनी हैं। उस पर 2-2 पतासे रखने है। 2 जगह अलग-अलग दाल डाल कर उस पर 2-2 बड़े पतासे रखने है। (ये ब्राह्मणी को देने है) दोनों बच्चों को तिलक लगा कर मौली बांध कर उनके गाले माले करके सिर से वार कर (सात बार करने हैं।) फिर बाबों का मत्था टेकना है। दाल शरीकों में बाँट देनी है। इस रस्म को भी जोड़ों में करना है। जोड़ा पूर्ण करने के लिए कनक की थाली बनाई जा सकती है । रीतों के समय पहले बाबा जी का माथा टेकना है, फिर तायों का उसके बाद घर के बड़ बजुर्ग रीतों बाले लड़के को पगड़ी पहनाकर तिलक लगा दें ।

खिलौने

तिथि और वार :-

खिलौनों का माथा टेकने के लिए तिथि और वार देखने पड़ते हैं। इसमें तिथियाँ :-

शुक्ल पक्ष की, दूज, पंचमी, त्रयोदशी, पूर्णमाशी तथा वदी पंचमी ही होनी चाहिए। यह कुनेत्तर, होली, मसांद और श्राद्ध के दिन भी बनाने नहीं चाहिए।

पेड़ी के खिलौने बनाते समय कोई भी लड़की उस कमरे में नहीं आ सकती और न ही खिलौने बना सकती है।

शनिवार, रविवार और सोमवार ही होना ज़रूरी है। दूसरे वार नहीं ले सकते।

जिस दिन माथा टेकना है उससे एक दिन पहले खिलौने बना सकते हैं।

सामान :-

मैदा ज़रूरत के अनुसार, घी, गुड़, पानी। घी गर्म करने के लिए पतीले, दो परातें, छः-सात थाल, 10-12 चकले और बेलने, मैदा तोलने के लिए तकड़ी-घी और पानी नापने के लिए लोटा, गैस या अंगीठी पानी और घी गर्म करने के लिए। चकला बेलन और थाल पोंछने के लिए साफ कपड़े और पोणे ।

जिस दिन खिलौने बनाने हैं, उस दिन सुबह उठकर सबसे पहले चकला, बेलने, परात व सभी बर्तन धो लें और जगह को भी अच्छी तरह से साफ करके चादरें बिछा दें और काम शुरू करने से पहले बाबा जी के नाम का सवा रूपया धो लें।

पेड़ी :-

इसमें बाबा जी के ही खिलौने बनाने होते हैं। ये अपने सभी शरीकों के घरों के आदमी और औरतें मिलकर बनाते हैं। इसमें लड़कियाँ हाथ नहीं लगातीं और पेड़ी के खिलौने बनाते समय कमरे में भी कोई लड़की नहीं आ सकती।

पेड़ी के खिलौने सवा पाँच किलो मैदे के बनाने होते हैं । अगर किसी को मुश्किल लगती हो तो वह सवा किलो मैदे के बना सकता है। पेड़ी के खिलौने बनाने के लिए घी, मैदा, पानी अलग ही सुच्चा रखना होता है।

सबसे पहले गैस पर घी और पानी अलग-अलग गर्म कर लें। फिर सवा किलो मैदा परात में डालें। (उसमें 250 ग्राम पानी और 250 ग्राम घी प्रति एक किलो के हिसाब से डालना है।) 325 ग्राम पानी और 325 ग्राम गर्म घी डालें ।अब मैदे को अच्छी तरह से गूंद लें और अच्छी तरह मल लें। अगर पानी या घी कम लगे तो थोड़ा-थोड़ा और घी डाल सकते हैं, ताकि अच्छी तरह मिल जाए।

जब मैदा तैयार हो जाए तो सबसे पहले दो मट्ठियाँ बेलकर दो टिकड़े बना लें जो न तो बहुत मोटे और न ही बहुत पतले। इनके ऊपर स्वास्तिक बना कर सात-सात खिलौने बना कर टिकड़ों के ऊपर रखकर

थाल में डाल कर अलग कमरे में साफ जगह पर एक सफेद चादर के ऊपर अलग ही रख दें ताकि वे सूख जायें । इस तरह एक किलो मैदा लेकर उसी हिसाब से 250 ग्राम पानी और 250 ग्राम घी डाल कर उसे मल कर पेड़ी बना लें और इन्हें बेल कर खिलौने बनाते जाएं और सबको सूखने के लिए चादर पर डाल दें। ये सब पेड़ी के खिलौने अलग ही रखने हैं।

जो घी बचे उसे भी अलग ही रखें और बचे हुए गर्म पानी को ठण्डा करके नाली में नहीं फैंकना, पौधे आदि में डाल सकते हैं या ऊपर छत पर डाल दें। पेड़ी के खिलौने बनाने के बाद सभी चकले, बेलने, थाली, प्लेट आदि को एक साफ कपड़े से पोंछ लें। यह बाबा जी के खिलौने अपने शरीके की औरतें ओर आदमी ही बना सकते हैं। बाकी आए हुए मेहमान, रिश्तेदार व लड़कियाँ नहीं बना सकतीं।

अब बाकी खिलौनों के लिए जितनी ज़रूरत हो उतना मैदा हलवाई से गुंधवा लें और सभी रिश्तेदार, मित्र, लड़कियाँ मिल कर ये खिलौने बना सकते हैं। इन खिलौनों को पेड़ी के खिलौनों से अलग चादर पर डालकर ही सूखाने हैं। जहाँ खिलौने बनाने हैं उस कमरे को सुच्चा ही रखना है। खाने-पीने का कार्यक्रम कमरे से बाहर ही रखें।

अगर हथभरा खिलौनों के साथ ही करना हो तो जितनी देर खिलौने सूखें उतनी देर में हलवाई से हथभरे की मट्ठियाँ बनवा लें। एक किलो मैदे में से 16 मट्ठियाँ अंदाज़ से बनवा लें।

अब हलवाई से कह कर कड़ाही और भट्ठी सुच्ची करा लें।

सबसे पहले कड़ाही में जो घी के खिलौने से बचा था उसको कड़ाही

में डाल कर उससे पहले टिकड़े तल लें फिर सारे बाबा जी के खिलौने तल लें। अगर घी कम हो तो और घी डाल लें। बाबा के खिलौनों को तल कर उन्हें ठण्डा करने के लिए टोकरी में रख लें और इसमें से अगर घी बच जाए तो पतीले में डालकर अलग रख लें और जब दूसरे दिन माथा टेक लेवें तब इस घी को रसोई में इस्तेमाल कर सकते हैं। इस घी से बनी हुई कोई भी चीज़ जमादार को नहीं दे सकते।

पेड़ी के खिलौनों के बाद उब दूसरे खिलौने भी तल लें।

सबसे पहले बाबा जी (पेड़ी) के खिलौनों को ही गुड़ लगाना है। यह गुड़ खिलौने तोल की एक किलो के हिसाब से 600-650 ग्राम गुड़ लगेगा। गुड़ की एक तार की चाशनी बना लें और थोड़ी सी चाशनी लेकर सबसे पहले बाबा जी के टिकड़े के ऊपर डालें। इसके बाद बाबा जी के खिलौनों को गुड़ लगाते जाए और इन्हें दूसरे खिलौनों से अलग ही रखें।

अब बाकी के खिलौनों को भी गुड़ लगाते जाएँ और अलग रखते जाएँ। इन सब खिलौनों को आज के दिन जूठा नहीं करना है। जब ठण्डे हो जाएँ तो रात को लिफाफों में भर लेवें।

''खिलौने चढ़ाने अथवा माथा टेकना''

सामान :-

कागज़ के 100 लिफाफे 250 ग्राम के

कागज़ के 50 लिफाफे 500 ग्राम के

कागज़ के 25 लिफाफे 1 किलो के

बाकी पोलीथीन के लिफाफे अंदाज़ से । ग्यारह रूपयों की मिश्री या शूगर क्यूब्स का तमासा, केसर, कच्चे चावल आदि

माथा टेकने की विधि :-

जब खिलौने सूख जाएं तब 70-80 लिफाफे 250 ग्राम वाले, 25 लिफाफे 500 ग्राम वाले और 25 लिफाफे एक किलो वाले खिलौने भर कर रख लें। इनमें बाबा जी के खिलौने नहीं डालने हैं ।

जिस जगह पर माथा टेकना है उसे साफ करके चादरें बिछा लें और सारा सामान वहाँ रखकर सब खिलौनों को चादर या अखबार से ढक कर रखें ।

अब शरीके के आदमी और औरतें उस कमरे में पूर्व की तरफ मुँह करके बैठें और माथा टेकने से पहले बाबा जी के भजन 'सोलड़े' आदि गा लें।

सबसे पहले एक थाली में बाबा जी के खिलौनों में से एक-एक खिलौना लेकर आठ बार रखना है। फिर उसी थाली में एक-एक

खिलौना लेकर नौ बार रखना है । जिसे हम ''नावा-ठावां'' कहते हैं। फिर उसी थाल में पाँच खिलौने बड़ो के नाम के रखने हैं और पाँच खिलौने धरती माता के नाम के रखने हैं। यह सब खिलौनों की अलग-अलग ढेरियाँ लगा कर थाली को एक तरफ अलग रख लें।

अब दूसरी थाली में बाबा जी के खिलौने डालें और उसके ऊपर टिकड़ों के छोटे-छोटे टुकड़े रखे दें।

अब तीसरी थाली में सात लिफाफे ½ किलो खिलौने वाले रखने हैं।

अब आदमियों को केसर का तिलक लगायें और औरतों में अपने शरीके की औरतों को ही तिलक लगाना है। लड़कियों को तिलक नहीं लगाना है। लड़कियों को माथा टेकने के समय पीछे ही बिठायें। अपने शरीके के सभी आदमी और औरतों को थोड़े-थोड़े चावल दे दें। सब औरतें सिर ढक कर ही माथा टेकें। अब सब शरीके के आदमी औरतें बैठीं हैं वहाँ आकर खड़े हो जाएँ और पहले पाँच बार नवकार मन्त्र पढ़ लें फिर लोगस्स, मंगल पाठ या स्तोत्र आदि पढ़ लेवें। पढ़ते समय सब अपने सिर पर रूमाल रख लें।

अब अपने बाबा जी का नाम लेकर उनसे भूल-चूक की माफी माँग कर अपनी सफलताओं की कामना करके कच्चे चावलों से सभी श्री दित्तू बाबा जी के नाम का जयकारा बुलाकर खिलौनों का माथा टेक लेवें। उसी समय आदमियों में से जो सबसे बड़े हैं उन्हें कह दें कि ग्यारह रूपयों का तमासा सुख लेवें। शादी के बाद यह तमासा जब भी किसी दूसरे घर में खिलौने हों तो वहाँ जाकर लड़के को बाबा जी बना कर ये तमासा चढ़ा दें। चाहे तो नवें वाले दिन भी तमासा चढ़ा सकते हैं । अब पुरूष अपनी-अपनी जगह पर बैठ जायें और औरतें घर के कुंवारे लड़के को

बुला कर बाबा बनायें। जिस लड़के की शादी है वह बाबा नहीं बन सकता। बाकी सभी कुंवारे बाबा बन सकते हैं ।

अब सबसे पहले टिकड़े वाली बाबा जी की थाली उसके हाथ में पकड़ा दें और उसके पैरों को चूमकर थाल वापिस नीचे रख लेवें। उसी थाल में से थोड़ा या टिकड़ा उस बाबा जी के मुँह से लगा दें। अब जिस थाली में सात लिफाफे रखे हैं उसे भी इसी तरह बाबा को पकड़ायें और पैर चूमकर वापिस रख लेवें। फिर तमासे वाले थाल बाबा जी को पकड़ायें और पैर चूमकर थोड़ी सी मिश्री मुँह में लगवा दें। फिर लड़की या लड़के की माँ जिस थाली में ''नावां-ठावां'' की ढेरियाँ लगाई हुई हैं उसे एक तरफ अलग करके माथा टेक लें। मन ही मन बाबा जी का नाम नहीं लेना। बड़ों का लेकर कहें कि भूल-चूक माफ करें।

बाबा जी के खिलौने वाला थाल उसी समय सबको थोड़ा-थोड़ा प्रसाद के रूप में खाने को दे दें। ''नावां-ठावां'' वाले थाल के खिलौने ब्राह्मणी को दे दें। जितने लोग माथा टेकने आये हैं सबको एक-एक लिफाफा जिसमें 250 ग्राम खिलौने हैं, दे देवें। अपने शरीके के सभी घरों में आधा किलो वाला खिलौनों कर लिफाफा देना है और उसमें थोड़ा-थोड़ा मिश्री का तमासा और एक-एक मुट्ठी बाबाओं के खिलौनों से डाल दें ।

अपने नज़दीकी रिश्तेदारों को एक किलो का लिफाफा देना है। (शरीके की लड़कियों को आधा किलो खिलौने डालकर लिफाफा देना है बाकी सभी रिश्तेदारों और मित्र-दोस्तों को खिलौने हिसाब से दे दें।)

शादी की मिठाई के डिब्बे बाँटने से पहले एक डिब्बा लेकर बाबा जी का माथा टेक लेवें।

जैसे हम खिलौने का माथा टेकते हैं उसी तरह से सारी रीत करके माथा टेकना है ।

हाथभरा

सामानः-

बूंदी, शक्कर पारे, गुलाब जामुन, मट्ठी, बर्फी दो थाली में अलग-अलग डालने है। एक थाली में ज्यादा सामान डालकर बाबा दित्तू जी का माथा टेकना है। एक थोड़े सामान वाली थाली से तायों का माथा टेकना है। तायों की मिठाई केवल आदमियों ने खानी है। पहले मिठाई मनसनी हैं।

इसके बाद हथभरे का माथा टेकना है। माँ व बेटे को सुच्चा मुँह रखना है। अगर ना रह सकते हो तो सूरज निकलने से पहले दूध पीकर ब्रश कर सकतें हैं।

9 लिफाफों में 7-7 बादाम डाल लें। बाबा दित्तू जी को माथा टेकने के लिए 4 किलो लड्डू मंगवा लें। पाँच डिब्बे अलग-अलग मिठाई के मंगवा लें ।

विधि :- सात जगह 7-7 लड्डू रखने है। ब्राह्मणी के लिए 7 लड्डू रखने है और 2 लड्डू अलग प्लेट में रखने हैं। उनका भी माथा अलग से टेकना है। जो पाँच डिब्बे मिठाई के लिए है उनसे 7 लिफाफे मिठाई के बना लें । बादाम और मिठाई के लिफाफे रख कर हथभरा करना है।

1 टीके वाली प्लेट में केसर, बर्फी, गुड़, चावल, और माँ के हाथ में डालने के लिए अट्टी रख लें। एक मौली का गोला भी रख लें ।

सबसे पहले एक जगह कागज् पर केसर का स्वास्तिक बना लें उस

पर बादाम रख दें। अब उस पर चौंकी या कुर्सी रख लें। जिस लड़के अथवा लड़की की शादी है उसको उस पर बिठा दें। उसका मुँह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। अब सबसे पहले उस बच्चे की माँ उस लड़के या लड़की के दायें हाथ में मौली का धागा बाँधेगी। फिर अपने दायें हाथ में तीन बार धागा बँधवा लें । अब पहले माँ के हाथ/बाजू में अट्टी डालनी हैं फिर लड़के या लड़की की माँ अपने नज़दीकी शरीकों की 9 सुहागिनों को मौली का धागा बाँध दें । जिन्हें 'चारियाँ' कहते हैं । मां ने सात बार घाले माले करने हैं। गर्भवती औरतों को चारियाँ नहीं बना सकते । अगर शरीके की औरतें कम पड़ें तो लड़की की पुत्रवधू को धागा बाँध सकते हैं । किन्तु लड़की को नहीं बाँधना है।

अब माँ शादी वाले लड़के या लड़की को केसर का टीका लगाये और अपने साथ तीन चारियों को ले जाकर जहाँ कढ़ाई में तेल गर्म किया हुआ है उसमें अपने हाथ से पीठी का बड़ा बना कर कढ़ाई में डाल दें । फिर तीनों चारियाँ एक-एक बड़ा डाल दें ।

अब जिस कढ़ाई में घी रखा है उसे गर्म करवा कर माँ सबसे पहले तीन चरियों के साथ मैदे के आटे की मट्ठी डाल दें, इस तरह छः चारियों का काम हो गया ।

इसके बाद माँ ने वहीं कढ़ाई के पास खड़े होकर अपनी दायें भुजा पर अट्टी पहन लेनी है और फिर शादी वाले बच्चे को दायें हाथ में मौली की अट्टी पहना दें ।

अब एक गत्ते का डिब्बा लेकर माँ उसमें पीठी से स्वास्तिक बनायें, उसके बाद तीन बाकी की चारियों ने उसके ऊपर थोड़ी-थोड़ी पीठी रखनी है । इसको 'बढ़ियाँ टुकणा' कहते हैं ।

हथभरे का माथा टेकना :-

विधि :-

एक थाल में सात मट्ठियाँ और दूसरे थाल में पाँच मट्ठियाँ बाबा जी के नाम की डाल कर रख लें । दूसरे थाल में सात जगह ग्यारह-ग्यारह मट्ठियाँ डाल कर रख लें। अब तीसरे थाल में एक मट्ठी के छोटे-छोटे टुकड़े करके एक-एक उठा कर आठ बार रखें फिर एक-एक करके नौ बार रखें । यह 'नावां ठावां' हो गया । इसी थाली में एक मट्ठी व मिठाई बड़ों के नाम से एक मट्ठी धरती माता के नाम से रखें और थाली को एक तरफ अलग रख दें । 9-9 बादाम की 7 थैलियां बनालें जो चारनियों को मिठाई के साथ बाद में देनी हैं।

शादी वाले लड़के या लड़की को पहले केसर का टीका लगायें । फिर शरीके की औरतों को टीका लगा दें और थोड़े-थोड़े चावल दे दें ।

पाँच बार नवकार मंत्र पढ़कर श्री बाबा जी के नाम का जयकारा बुलाकर भूल-चूक की माफी माँग कर माथा टेक लेवें ।

एक कुंवारे लड़के को बाबा बना कर उसे सात मट्ठियों वाला थाल पकड़ायें और उसके पैर चूम लें और थोड़ी सी मट्ठी बाबा जी के मुँह लगवा दें। सोलड़ें गायें। फिर ताया जी का माथा टेकना हैं।

अब नावां-ठावां वाली थाली को एक तरफ करे मन में बड़ों का नाम लेकर माथा टेक लेवें ।

फिर पाँच मट्ठियों वाला थाल शादी वाले लड़के या लड़की की झोली में डाल दें । अब माँ दोनों हाथ के अंगूठों से केसर लगा कर शादी वाले बच्चे के सात बार 'गाले-माले' कर लें । फिर पाँच बार नवकार मन्त्र

पढ़कर बच्चे को उठा दें ।

हथभरे के बाद माँ ने अपने साथ शादी वाले लड़के या लड़की को साथ लेकर एक डिब्बा मिठाई का भी साथ लेकर पैर डालने जाना है । पैर डालने के लिये आप अपनी लड़की के घर या मन्दिर में या स्थानक में जा सकते हैं और वापिसी में थोड़ा सा उनसे शगुन ले कर आना है । अगर मन्दिर या स्थानक में पैर डालना है तो आते समय कुछ फल लेकर आ सकते हैं ।

हथभरा

जो खिलौने नहीं बनाते

पहले मिठाई मनसनी है

सामानः- बूंदी, शक्कर पारे, गुलाब जामुन, मठट्री, बर्फी । दो थाली मेंअलग-अलग डालने है। एक थाली में ज्यादा सामान डाल कर बाबा जी का माथा टेकना है। एक थोड़े समान वाली से तायों का माथा टेकना है। तायों की मिठाई केवल आदमियों ने खानी है।

इसके बाद हथभरे का माथा टेकना है। माँ व बेटे को सुच्चा मुँह रखना है। अगर ना रह सकते हो तो सूरज निकलने से पहले दूध पीकर ब्रश कर सकतें हैं ।

लिफाफों में 7-7 बादाम डाल लें। बाबा जी को माथा टेकने के लिए 4 किलो लड्डू मंगवा लें। पाँच डिब्बे अलग-अलग मिठाई के मंगवा लें। विधि :- सात जगह 7-7 लड्डू रखने है। ब्रह्माणी के लिए 7 लड्डू रखने

है और 2 लड्डू अलग प्लेट में रखने हैं। उनका भी माथा अलग से टेकना है। जो पाँच डिब्बे मिठाई के लिए है उनसे 7 लिफाफे मिठाई के बना लें । बादाम और मिठाई के लिफाफे रख कर हथभरा करना है। 1 टीके वाली प्लेट में केसर, बर्फी, गुड़, चावल, और माँ के हाथ में डालने के लिए अट्टी रख लें। एक मौली का गोला भी रख लें ।

सबसे पहले एक जगह केसर का सवास्तिक बना लें उस पर बादाम रख दें। अब उस पर चौंकी याकुर्सी रख लें। जिस लड़के लड़की की शादी है उसको उस पर बिठा दें। उसका मुँह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। अब सबसे पहले उस बच्चे को मौली बाँधनी है। पहले माँ के हाथ में अट्टी डालनी है। फिर नज़दीकी रिश्तेदारों में से 9 चारियों को मौली बाँधनी है और सात बार गाले-माले करने है। फिर पाँच बार नवकार मन्त्र पढ़कर बच्चे को उठा दें ।

हथभरे के बाद माँ ने अपने साथ शादी वाले लड़के या लड़की को साथ लेकर एक डिब्बा मिठाई का भी साथ लेकर पैर डालने जाना है । पैर डालने के लिये आप अपनी लड़की के घर या मन्दिर में या स्थानक में जा सकते हैं और वापिसी में थोड़ा सा उनसे शगुन ले कर आना है। अगर मन्दिर या स्थानक में पैर डालना है तो आते समय कुछ फल लेकर आ सकते हैं ।

घोड़ी

एक किलो चने की दाल सुबह भिगो दें। घोड़ी के बाद लड़का दुल्हन लेकर ही घर आता है। अगर कहीं परदेस जाकर शादी करनी हो तो लड़के को घोड़ी के बाद किसी रिश्तेदार के घर ठहरा देते हैं।

घोड़ी के समय घर का बुजुर्ग पाँच बार नवकार मन्त्र पढ़कर लड़के के सिर पर पगड़ी या साफा आदि रखते हैं। फिर घर के लोग हार आदि डाल कर शगुन करते हैं। भाभियाँ सुरमा डालती हैं और बहनें घोड़ी के बाल गूंथती हैं या लगाम पर मौली बांधती है जो चने की दाल भीगी हुई है उसे घोड़ी का खिलानी है ।

जिस कमरे में बहू को लाकर बिठाते हैं वहाँ पहले पूर्व की तरफ गागर या मटका रखें। इसमें चारियों ने जो मट्ठियाँ और बड़े बनाये थे वे सब और सात बदाम डाल दें।

थोड़े से चावल कुछ देर पहले भिगो दें। अब भीगे हुए चावलों को रगड़ कर उससे पहले गागर को पोंछ लें, उन्हीं चावलों से दीवार पर कागज़ लगा कर सात थापे लगाएँ। पहले चार थापे लगाएँ उसके नीचे दो थापे और उसके नीचे एक थापा लगाएँ।

अब छः गिलास लेकर उनमें एक-एक में एक चम्मच घी, एक चम्मच सरसों का तेल, एक चम्मच काले चने, एक चम्मच सफेद चने, एक चम्मच साबुत मूँग की दाल, एक चम्मच काले माह की दाल डाल कर रखने हैं। इन गिलासों में साबुत अनाज ही डालना होता है।

लाल रंग के कपड़े की एक गुत्थी बना लें। उसमें 50-60 रूपयों के सिक्के डाल कर रख लें।

अब सात प्लेटों में थोड़ी-थोड़ी बूँदी डाल कर दरवाज़े के आगे लाईन में रखें ।

बहू के घर आगमन पर

जब लड़का बहू लेकर घर आता है तो सबसे पहले दरवाज़े पर तेल चोने का शगुन कर लें। लड़के की माँ ने जग या गड़वे में पानी डालकर और प्लेट में थोड़ा सा नमक रखकर दायें से बायें तरफ सात बार थोड़ा-थोड़ा नमक गिराना है। फिर पानी के जग को भी ऐसे ही फिराना है थोड़ा-थोड़ा पानी नीचे गिराना है। छः बार तक लड़के ने माँ को पानी पीने से रोकना है, जब माँ जग को मुँह की तरफ लेकर जाती है तभी लड़के ने उसका हाथ पकड़ कर रोक लेना है। सातवीं बार माँ को पानी पीने देना है।

इसी समय दरवाज़े पर एक कुंआरी कन्या ने जग, गिलास या गड़वी में पानी लेकर खड़े होना है। उसमें सवा रू के सिक्के डाल दें और बाकी नगद हाथ में दे दें।

अब लड़का अन्दर आकर बूँदी वाली प्लेटों को पाँव से छूता जाए और बहू उन प्लेटों को इकट्ठी करती जाए। फिर लड़के और बहू को जिस कमरे में गिलास और गागर रखे हुए हैं लाकर बिठायें।

अब घर के बुजुर्ग या लड़के के पिता जी बहू को 'दम्मा बोरी' करवाते हैं। लाल रंग के कपड़े वाली गुत्थी में बहू का हाथ डलवाकर मुट्ठी भरकर सिक्के निकलवायें और उन्हें गिन लें - कितनी कलियाँ और कितने जोटे हैं। ये शगुन सात बार करना है। दमा-वोरी रस्म के साथ सात गिलास (अलग-अलग साबुत अनाज के भरे हुए) में हाथ लगवाते हैं।

फिर बहू सास-ससुर के पैरों को हाथ लगाती है और वह उसे मुँह-दिखाई का शगुन देते हैं । बाकी सभी रिश्तेदार उस समय मुँह-दिखाई का शगुन देते हैं।

उसी समय बहू को गोद में एक छोटा लड़का भी बिठाते हैं और उसे लड़के को भी शगुन देते हैं।

लड़के और बहू के पैरों में जो गाना बंधा होता है उसे शादी की पहली रात को खोलकर पलंग के किनारे बाँध देते हैं।

हमारे गादिया परिवारों में लड़के और बहू को लस्सी-मुन्दरी या कंगना खेलने की रीत नहीं है।

गागर गिलास और प्लेटों वाली सारी मिठाई और साबुत आनाज दूसरे दिन ब्राह्मणी को दे देवें।

लावां/लड़की की डोली

लावां के समय भाई लड़की के हाथों में फुलियाँ डालते हैं और वह उसे नीचे आग और घी में डाल देती है। उसी आग के गिर्द लड़की और दामाद फेरे लेते हैं । माँ-बाप दामाद को शगुन के रूप में कुछ देते हैं।

डोली के समय भाईयों को लड़की केसर से टीका लगाती है और वे उसे शगुन में रूपए देते हैं । बाकी रिश्तेदार भी लड़की और दामाद को रूपये देते हैं ।

फिर लड़की और दामाद को माँ खिचड़ी और दही खिलाती है। थोड़ा-थोड़ा शगुन ही करना होता है, फिर एक कटोरे में चीनी डाल कर लड़की को देती है तथा सहुाग पिटारी में सुच्ची मिठाई और माँ की बाजू पर बंधी अट्टी डालकर ससुराल भेज देते हैं। डोली के बाद माँ सबसे पहले वहीं पर बैठ कर दूध पीती है।

दीपावली

सामान:-

6 कोल डोडे, 3 छुआरे, 1 नारियल, फुल्लियां, खिलौने मीठे, चने काले भुजे हुए, रुई की बत्तियाँ, फल, मिठाई, मोमबत्ती, सरसों का तेल, मीठा तेल, पतासे, सरसों का तेल, फोटो महावीर स्वामी जी और लक्ष्मी जी की

विधी:-

पूजा के लिए चौकी रखनी है। एक छोटी कटोरी भीगे चावल को गाढ़ा-गाढ़ा पीस लेना है। इन चावलों से चौकी के ऊपर व नीचे टीके लगाने है। खड़िया मिट्टी से घर के दरवाजे के आगे लक्ष्मी देवी के पैर चिन्ह बना लें। सब जगह ऊँगलियों के निशान अंदर को होने चाहिए। चौकी पर हटरी, एक थाली में दीये, एक थाली में चांदी के सिक्के रख कर उस पर नारियल रखें। हटरी के ऊपर दीया जगा लें। उसी चौंकी के एक तरफ एक प्लेट में 7 दीये रखने है। इनमें 1-1 कोल डोडा व एक-एक छुआरा डालना है। एक कोल डोडा व एक छुआरा बड़े दीये में डालना है। पहले बड़े दीये और जो छोटे दीये थाली में रखने है उनसे बाबों का माथा टेकना है और उस समय स्थान पर लड़कियां न हो। आरती पढ़नी है।

नोट:- दीवाली जगाने से पहले मूँगी की छिलके वाली दाल और चावल मिला कर खिचड़ी बनानी है। दहीं और खिचड़ी मुँह लगा कर सबने दीवाली जगानी है।

दीवाली की समाप्ति पर पहले पाँच नवकार मंत्र पढ़ने हैं। चौकी हिला कर बड़ा दीया जो बीच में जगाते है उसे सूरज निकलने से पहले बाहर नल्के के पास रख देना है। फिर सब दीये उठा कर जो प्रवाह करने वाले है उनको प्रवाह कर देना है और जो धोने वाले है उनको धो कर रखना है ।

न्योज

दीवाली के दूसरे दिन सुबह उठते ही घर की औरतें थोड़े से चावल उबाल लें और मूँगी बना लें, चार रोटियाँ बनाकर गिलास में चावल डाल लें, उसके ऊपर चारों रोटियाँ रख दें और एक कटोरी में मूँगी डाल कर कच्चे चावलों से न्योज का माथा टेक लेवें। और यह सब ब्राह्मणी को दे दें। इस न्योज के साथ एक प्लेट में थोड़ी सी फुलियाँ और मिठाई डालकर भी ब्राह्मणी को अवश्य दें।

फिर बाहर से एक गिलास पानी मंगवा कर घर में झाड़ू सफाई आदि करवायें। न्योज वाली रात को भी दीवाली वाले कमरे में दीवे जगाने हैं।

दीवाली के तीसरे दिन यानि टीके वाले दिन केसर से टीका लगा कर दीवाली उठा लें।

श्री दित्तू बाबा जैन गादिया पावन स्थल (टोमरी)

अरदास

हे बाबा जी,

अस्सी सब मिल के त्वाडी अराधना ते उपासना करदे हां। साडे सब कोलों कोई भुल-चुक हो गई होय, ते त्वाडे कोलो क्षमा मंगदे हां।

बाबा जी अस्सी भुलनाहार हां, तुसी बक्षनहार हो, साड्डिया सब दिया भुल चुका माफ करनियां। अस्सी हमेशा त्वाडे कोलो मन्ता मंगदे रहिये, तुस्सी अपनी रहमतां वरसांदे रहीयो। साडे सब दे कारोबार विच तरक्की होवे व परिवार विच खुशहाली रहे। ऐ ही सब दी भावना है, ऐ ही उमंग है।

बोल बाबा दित्तू जी, त्वाडी सदा ही जय।

श्री महावीराय नमः

संजीव जैन 'आत्म'-मधु जैन

सुव्रत जैन-रिया जैन

श्रेयांस जैन-कृतिका जैन

मैहर जैन

श्री सावन मल - बसन्त राम - हीरा लाल जैन परिवार स्यालकोट वाले

Zorro Fabrics Pvt. Ltd. Vill. Hussainpura, G. T. Road(west)Ludhiana

आरती

श्री दित्तू बाबा जी की

ॐ जय दित्तू बाबा, स्वामी जय दित्तू बाबा ।...
दीन दयाल कृपालु, हो सबके दाता, ॐ जय ।।...

चित्त हो जाए निर्मल, मन हो जाए पावन, बाबा मन ।...
ऋद्धि सिद्धि सब पावें, महके हर आँगन, ॐ जय ।।...

चरण-शरण में बाबा, जो कोई आवे, बाबा जो ।...
बिन मांगे ही तुमसे, मन वांछित पावे, ॐ जय ।।

तुम हो दया के सागर, तुम पालन हारे, बाबा तुम ।...
आस लिए हम दिल में, आये तेरे द्वारे, ॐ जय ।।...

कुल उपकारी बाबा, तुम संकट त्राता, बाबा तुम ।...
कल्पवृक्ष चिंतामणि, सुख-सम्पत्ति दाता ॐ जय ।।...

हम अनजान अनाड़ी, बालक हैं तेरे, बाबा बालक ।...
तुम हो पूर्ण ज्ञानी, जीवन रक्षक मेरे, ॐ जय ।।...

तुम स्वामी जग पालक, अर्ज़ सुनो मेरी, बाबा अर्ज़ ।...
मन-मन्दिर में आओ, शरण पड़ा मैं तेरी, ॐ जय ।।...

नाम उच्चारें निशदिन, ध्यान धरें तेरा, बाबा ध्यान ।...
भव-सागर से बेड़ा, पार करो मेरा ॐ जय ।।...